तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन के उपागम :
परम्परागत व आधुनिक

परम्परागत उपागम → अरस्तू को ही परम्परागत दृष्टिकोण का जनक माना जाता है। तुलनात्मक अध्ययन के परम्परागत दृष्टिकोण के अवशेष अरस्तू से पहले भी पाए जाते है। लेकिन अरस्तू ने तुलनात्मक अध्ययन को सुव्यवस्थित किया। ये तुलनात्मक राजनीति विश्लेषण के परम्परागत उपागमों मे ऐतिहासिक उपागम कानूनी, औपचारिक उपागम तीनो का अध्ययन शामिल है

ऐतिहासिक उपागम → ऐतिहासिक उपागम के अन्तर्गत भिन्न, भिन्न राज्यों की शासन प्रणालियों के ऐतिहासिक विवरण तैयार करके उसकी तुलना करते है। और यह पता लगाते है कि हमे अपने वर्तमान लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए तथा संभावित त्रुटियों के निवारण के लिए कौन - कौन से उपाय करने चाहिए। ऐतिहासिक उपागम के प्रतिपादक निकोल माण्टेस्क्यू, वेजहॉट व सर हेनरी मेन है। ऐतिहासिक सामग्री का संकलन करते समय हमारा ध्यान केवल शासक वर्ग की गतिवि तक सीमित नही रहना चाहिए। बल्कि तत्कालिन सामाजिक - आर्थिक परिस्थिति सास्कृतिक चेतना के स्तर जनसाधारण की भावनाओ और आन्दोलनो के बारे पूरा विव अवश्य तैयार करना चाहिए।

आधुनिक दृष्टिकोण

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद परम्परागत दृष्टिकोण के विरुद्ध प्रतिक्रिया स्वरूप जो विश्लेषण निरी तथा परीक्षण की नवीन पद्धति विकसित हुई इसे उन्हीं को आधुनिक उपागम कहा गया आधुनिक उपागम में तुलनात्मक अध्ययन से राजनीतिक संस्थाओं के साथ - साथ और राजनीतिक समूहों, दबाव समूहों, राजनीतिक दलों के व्यवहार, मतदान व्यवहार लोकमत आदि के अध्ययन को भी शामिल कि